शोध पत्र प्रकाशन में चीन के बढ़ते कदम

हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक वैज्ञानिक शोध पत्रों के प्रकाशन के मामले में चीन तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और अब वह युरोपीय संघ और अमरीका के बाद तीसरे नंबर पर आ गया है। यह रिपोर्ट यूएस नेशनल साइंस फाउंडेशन द्वारा जारी की गई है।

रिपोर्ट के मुताबिक 2001 से 2011 के दरमियान चीनी वैज्ञानिकों द्वारा लिखित शोध पत्रों की संख्या में प्रति वर्ष 15 प्रतिशत का इज़ाफा हुआ है। 2001 में चीनी लेखकों के शोध पत्र विश्व में प्रकाशित कुल शोध पत्रों में से मात्र 3 प्रतिशत होते थे और 2011 में ये 11 प्रतिशत हो चुके थे। इसी दौरान युरोप के देशों और यूएस से प्रकाशित शोध पत्रों की संख्या में गिरावट आई है।

इन आंकड़ों से पता चलता है कि चीन वैश्विक वैज्ञानिक अनुसंधान व विकास में अपना योगदान बढ़ाने के सतत प्रयास कर रहा है।

विश्व स्तर पर 2011 में वैज्ञानिक शोध व विकास कार्यों पर 1435 अरब डॉलर खर्च किए गए। चीन व अन्य एशियाई देशों का हिस्सा इसमें से एक-तिहाई था। यह यूएस के शोध व विकास खर्च से ज़्यादा था। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि चीन ने अपने सकल घरेलू उत्पाद का जितना प्रतिशत शोध व विकास गतिविधियों पर खर्च किया वह युरोप से ज़्यादा है।

अलबत्ता, आम धारणा यह है कि अभी भी गुणवत्ता के स्तर पर चीन के शोध पत्र बहुत आगे नहीं बढ़ पाए हैं। एरिज़ोना राज्य विश्वविद्यालय में चीनी विज्ञान के विशेषज्ञ डेनिस सिमोन की राय है कि चीन में जो वैज्ञानिक कार्य चल रहा है वह बहुत नवाचारी नहीं कहा जा सकता। चीनी शोध पत्रों का हवाला अन्य वैज्ञानिक अपने शोध पत्रों में बहुत ज़्यादा नहीं देते हैं। ऐसा माना जाता है कि कोई शोध पत्र जितना महत्वपूर्ण होगा उसका ज़िक्र उतने ही ज़्यादा शोध पत्रों में आएगा। खास तौर से देखा जा रहा है कि चीनी शोध पत्रों का ज़िक्र अन्य देशों से प्रकाशित शोध पत्रों में बहुत कम होता है। चीनी शोध पत्र मूलतः दक्षिण कोरिया व ताइवान के शोध पत्रों में उद्धरित किए जाते हैं। इससे पता चलता है कि चीनी शोध कार्य मुख्य रूप से उस देश तक ही सीमित है, उसका वैश्विक असर बहुत कम है।

ऐसा कहा जा रहा है कि यदि चीन को सचमुच यूएस व युरोपीय संघ से लोहा लेना है तो उसे अपने यहां से प्रकाशित शोध की गुणवत्ता में सुधार लाना होगा। एक मत यह भी है कि चीन ने पहला पड़ाव (संख्या) पार कर लिया है और अब वह सजगता से गुणवत्ता पर ध्यान दे रहा है। ***(स्रोत फीचर्स)***